INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 2, February 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

# असग़र वजाहत के साहित्य परवैश्वीकरण का प्रभाव

**मा.नवनाथ देवराव इंगळे**
(एम.ए.,एम.एड.)पी.एच-डी.शोधछात्र
तरवडी, तह. नेवासा,जि. अहिल्यानगर

**सारांश:-**

भूमंडलीकरण ने मनुष्य की प्रतियोगिता को इतना तीव्र कर दिया कि वह अपनी इच्छाएँ पूरी करने के लिए पूर्णता मैदान में उतरा है। कई जगहों पर पशुओं से बदतर व्यवहार करने लगा है। इस प्रतियोगी दौर में संस्कृति और परंपरा के बारे में कोई सोच विचार करते नही दिखरहा है। जब संस्कृति पर चोट पड़ती है तब हमारे तरीके बदल जाते हैं।हम प्रतिरोध करने का प्रयास करते हैं प्रतिरोध से बदलाव नहीं हुआ तो धीरे-धीरे उस बदलाव को ही स्वीकार करते हैं। इससे नई संस्कृति का उदय होता है। भूमंडलीकरण ने हमें अन्य राष्ट्रों के बाजारों के द्वार खोल दिए लेकिन हमारी संस्कृति के किवाड़ हमेशा-हमेशा के लिए बंद कर दिए। आज विज्ञापनों का दौर आया जो टीवी और मोबाइल द्वारा हमारे घर तक पहुँच गया। हमारे रहन-सहन, सोच विचार, संस्कृति यह सब बदल गए। साहित्य में भी बदलाव आ गया। ऐसे-ऐसे विज्ञापन निर्माण हुए जिन्हें परिवार के साथ बैठकर देखना मुनासिब नहीं है। भूमंडलीकरण के इस बाजारू अप संस्कृति ने हमारी परंपरा पर गहरा प्रभाव डाला। इसने वर्तमान के साथ-साथ हमारे भविष्य पर भी प्रश्न चिन्ह उपस्थिति किए।

भूमंडलीकरण ने इंसान को मशीनों में उलझा दिया है। सब कुछ मिलने की कोशिश में उसे कुछ भी हासिल नहीं हो रहा है। इस संदर्भ में सुधीश पचौरी का वक्तव्य है, “**अब इंसान इस ग्रह का नियंता और ईश्वर को सबसे खूबसूरत रचना नहीं बल्कि उपभोक्ता है। यहाँ सबके लिए सब कुछ है लेकिन फिर भी किसी को कुछ हासिल नहीं होता। उत्तर आधुनिक के इस कालखंड को सकारात्मक पहचान देने के लिए स्वास्थ्य और सार्थक बहस को परिणाम तक पहुँचाना ही होगा।**”[1]

समाज में धन की प्रतिष्ठा पूंजीपतियों को श्रेष्ठ स्थान देती है। धन के आगे धर्म, बुद्धि, प्रेम यह सब फीके हैं। दौलत से यह सब खरीदा जाता है। राजनीति पर भी धन दौलत का प्रभाव दिखाई पड़ता है। धनी लोग आम आदमी की जान भी ले लेते हैं। तो भी उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। नेता अपना वर्चस्व अच्छेसे बनाए रखने के लिए जनता को मूर्ख बनाते हैं। यही व्यवस्था सब जगह पर शुरू है। भ्रष्ट व्यवस्था और पूंजीवादी स्थिति ने समाज को खोखला बना दिया है। असग़र वजाहत जी ने ‘स्विमिंग पूल’ नाम के कहानी में यह सब दिखाने का प्रयास किया है। घर के पास गंदे नाले की बार-बार शिकायत करने पर भी नाला साफ नहीं होता। एक दिन वही नाला जमाने की खुशियाँ और सपने लेकर डूबता है। इस कहानी में गंदा नाला यह एक प्रतीक है। भ्रष्टाचार का प्रतीक जो कभी खत्म होने वाला नहीं है। भूमंडलीकरण से बदलने वाले जीवन क्रम और बदलती हुई संस्कृति को इसमें दिखाया गया है। नाले में जो फूल, किताबें, पेड़, घोसला, शहनाई आदि टूटी-फूटी चीजें गिरी हुई है वह समय के साथ-साथ लुप्त होने वाली हमारी संस्कृति है। ऐसा कहानीकार को लगता है। यह समाज के बदलाव के संकेत है। बाल शोषण और नारी भ्रूण हत्या जैसे गंभीर विषयों पर कहानीकार ने सूक्ष्मता से  चित्रण किया है।उनकी ‘पिचासी कहानियों’ में वैश्वीकरण का प्रभाव दिखाई पडता है।स्विमिंग पूल, ड्रेन में रहनेवाली लडकियाँ,बनना, आग, गिरफ्त,सूफी का जूता,सरगम कोला आदि कहानियों के साथ-साथ‘समीधा’और ‘वीरगति’ नाटकों में भी वैश्वीकरण का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पडता है।

**मूल शब्द**

भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण, साहित्य, संस्कृति, विज्ञापन, पूंजीवाद

**विस्तार:-**

भूमंडलीकरण ने हमें ऐसे प्रलोभन दिए जिससे रिश्ते, नातों के साथ-साथ साहित्य संस्कृति पर भी गहरा असर हुआ। सपनों के इस दुनिया ने हमें अपनी जंजीरों में इतना जकड़ दिया कि इस उलझन से हम कभी सुलझ न सके। जीवन को सुरक्षित और सुंदर व संपन्न बनाने के लिए मनुष्य मन ही मन कितनी बार मर चुका होगा लेकिन इस चकाचौंध

वाली दुनिया को इससे क्या? अनंत अभिलाषा से भरे इस जमाने में एक पूरी करो तो दूसरी सामने आती है।इन्हीं इच्छाओं को पूरा करने की कोशिश में हम खुद समाप्त हो रहे हैं। यह पता नहीं कि इस भौतिक अभिलाषा को कभी पूरा किया जा सके। यह भौतिक स्थिति हर समय बदलती रहती है और मनुष्य उसके पीछे भागता रहता है। जीवन भर उसकी इच्छाएँ अधूरी की अधूरी रह जाती है। असगर वजाहत ने अपने साहित्य में भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण के प्रभाव से बदलते हुए जीवन क्रम को बखूबी चित्रित किया है।

भूमंडलीकरण का प्रमुख उद्देश्यमनुष्य को सुख सुविधा उपलब्ध हो यह था। लेकिन जैसे-जैसे सत्ता और संपत्ति आ गई वैसे-वैसे लोगों की महत्वाकांक्षाएं बढ़ गई। आज तक जितने भी युद्ध हुए उसके पीछे सत्ता और संपत्ति यही उद्देश्य रहा है। खुद को बड़ा दिखाना इस महत्वाकांक्षा को लेकर युद्ध खेले गए।यह महत्वाकांक्षा न किसी की पूरी हुई न होगी।लेकिन इसके परिणाम आजविश्व को भुगतने पड रहे है। फिर भी हर एक के मन में यह इच्छा है कि उसका राष्ट्र सबसे ऊपर होना चाहिए। सब राष्ट्रोंपर अपने राष्ट्र की सत्ताहो। मनुष्य अपनी इच्छाएं पूरी करने के लिए कुछ भी कर सकता है। इस प्रकार के प्रयास आज सभी ओर दिखाई पड़ते हैं।वैश्वीकरण से भारतीय पुरानी परंपरा और संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा है नाते, रिश्ते, परिवार, रहन-सहन सब बदल चुका है। दुष्यंत कुमार ने अपनी कहानी 'बीच सड़क पर' में युवाओं की मनोदशा को उजागर करते हुए वैश्वीकरण से किस प्रकार उपभोक्ता संस्कृति का निर्माण हुआ है यह दिखाया है। कहानी कीनायिका कहती है, **"आज आओगे? वी विल मेक लव फॉर वन लास्ट टाइम! लड़के ने आँखें बंद कर ली। लंबी सांस ली और मुझे यकीन है, फिर तुम्हें इस अतीत पर कोई अफसोस नहीं होगा।"**[2]

भूमंडलीकरण ने जहाँ आदमी को भौतिक सुख के पीछे भागने के लिए मजबूर कर दिया। वहीं पूंजीवादी व्यवस्था ने समाज का चित्र ही बदल दिया। जहाँ विज्ञान उन्नति के तेज रफ्तार में आगे जा रहा है वही मनुष्य अंधभक्त के खाई में खुद को धकेल रहा है। जहाँ सिर्फ अनपढ़ अशिक्षित लोग ही नहीं पढ़े लिखे लोग भी संन्यासी,बुआ, महंतो के जाल में फँस रहे हैं। धार्मिक रूढ़ियों से निर्माण हुआ अज्ञान ऐसे साधू और महंतों को समाज में उच्च स्थान दे देता है। इसका यह लोग फायदा उठाते हैं। असगर वजाहत का नाटक 'समीधा' इसी प्रकार का उदाहरण है। जिसमें लोगों को ठगने के लिए एक प्रकार की चाल चलाई जाती है। लोग कैसे फँसे इसकी योजनाएँ बनाई जाती है।'वीरगति'नाटक का पात्र सुकुमार निरोगी बनने के लिए हकीम,वैद्य, पंडित आदि के पास चला जाता है। वहाँ जाने से इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न होती है कि इलाज करने के बजाय आपस में झगड़ा होता है।'वीरगति' नाटकमें सुकुमार कोठीक करने के लिए हकीम, वैद्य, पंडित,ओझा आदि की होड़ लगती है और वह एक दूसरे को कम दिखाने का प्रयास करते है। वैद्यहमें यह बताना चाहता है कि आज अस्पतालों के हकीम का भी विश्वास नहीं रह चुका है। यह वैश्वीकरण का परिणाम है वह कहता है।

**"हकीमों से बचो यह जान ले लेते हैं लोगों की**

**दवा देते हैं पर इनको नहीं पहचान रोगों की**

**न रोगी से, न रोगों से, इन्हें पैसों से मतलब है**

**हकीमों से बचो ये जान ले लेते हैं लोगों की।"**[3]

असगर वजाहत ने'बनना' कहानी द्वारा राजनेताओं पर करारा व्यंग्य कसा है। सरकार की नीतियाँ भ्रष्टाचार, धांधली,घूस, कमीशन, महंगाई, बेरोजगारी अन्य समस्या पर ध्यान न देकर अनावश्यक बातों पर बहस कर रही है। धर्मनिरपेक्षता की जगह पर जाति और धर्म की चर्चाएँ संसद भवन में करवाई जा रही है। नेता अनपढ़ है और पुलिसकर्मियों की भूमिका हास्यस्पद है। आज के समय को दर्शाती हुई यह कहानी प्रशासन की कमजोरी को उजागर करती है। भूमंडलीकरण से बाजारवाद का उदय हुआ और बाजारवाद इतना हावी हो गया है कि पूंजी बटोरने के लिए हर कोई साजिशउद्घाटित कर रहा है। अस्पताल और पारिवारिक रिश्ते भी इसकी गिरफ्त में आ गए हैं।

'सरगम कोला' कहानी कला क्षेत्र में हो रहे बाजारवाद का चित्रण करती है। वैश्वीकरण ने कला को बाजार में लाकर खड़ा कर दिया है। धन प्राप्ति के लिए कला संस्कृति पर उन्हीं लोगों ने अपना कब्जा जमाया है जो भ्रष्ट तरीके से धन कमाते हैं। कला को भी उन्होंने पैसा कमाने का एक साधन बनाकर रख दिया है। कहानी में वास्तविकता को दिखाया है,**"ये साला निकल रहा है 'आर्ट सेंटर' का डायरेक्टर। पेंटिंग बेच-बेचकर कोठियां खड़ी कर लीं। अब**

**सेनीटरी फिटिंग का कारोबार डाल रखा है। यहां साले आर्ट कल्चर करते हैं। क्योंकि इनको पब्लिक रिलेशन का काम सबसे अच्छा आता है। पार्टियां देते हैं। एक हाथ से लगाते हैं, दूसरे से कमाते हैं। अपनी वाइफ के नाम पर इंटीरियर डेकोरेशन का ठेका लेता है।"**[4]

'गिरफ्त' कहानी में असग़र वजाहत ने भूमंडलीकरण की साजिशें, बाजारीकृत होता समाज, पूंजीवादी व्यवस्था आदि को दिखाया है। हमारे महान संस्कृति में आए बदलाव मल्लू पात्र द्वारा दिखाने का प्रयास किया है। मल्लू निम्नवर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। धन संपत्ति के लिए कुछ भी करने को तैयार है। वह खून बेचता है, अपनी पत्नी को मारपीट करता है, बच्चों को गालियाँ देता है और शराब पीकर मोहल्ले वालों से झगड़ता है। खून देने के दौरान उसकी मौत होती है। भारतवर्ष की परंपरा के अनुसार मरने के बाद वह महान बनता है। मरणोपरांत उसके अच्छे कर्म सामने लाए जाते हैं। वह अमर हो जाता है। आम आदमी की यह स्थिति है इसी प्रकार राजनेता पूंजीपति आदि लोगों की जयंती पुण्यतिथि उत्सव मनाए जाते हैं इस कार्यक्रम के लिए रक्तदान, वृक्षारोपण, स्वास्थ्य चिकित्सा और रोग निदान जैसे बड़े-बड़े शिविरों का आयोजन किया जाता है। इन बातों का सभी चैनलों और वार्तापत्रों में वार्तांकन होता है। जहाँ मंत्री और प्रधानमंत्री आते हैं चंद चुनिंदा लोगों को सामने रखा जाता है। 'गिरफ्त' कहानी में गीताजी खून देने का नाटक कर रही है। असलियत यह है कि मल्लू खून दे रहा है, **"बोतल में खून टपक रहा था।मल्लू टेंट में दाबे रूपयों को मुट्ठी में दाबे सोच रहा था।दो महीने का राशन लाकर डाल देगा। ताकि रोज-रोज की किलकिल खत्म हो जाए। सबके कपड़े भी बन जाएंगे... बच्चों के लिए मिठाई भी ले जाएंगे। और जमकर पिएगा...विलायती पिएगा...मुर्गा भी खाएगा...सेकेंड शो पिक्चर देखेगा। पिक्चर के दृश्य आँखों के सामने घूमने लगे...फिर धीरे-धीरे उसकी आँखें बंद होने लगीं। बूंदें टपक रही थीं। उसने जोर लगाकर आँखें खोलना चाहीं, लेकिन गहरी नींद के दबाव में आँखें बंद होती गई। टेंट में दबे नोटों पर उसकी गिरफ्त मजबूत हो रही थी।"**[5]

पूंजीपति की गिरफ्त में पड़े अस्पताल, सरकारी कार्यालय, राजनेता, स्वयंसेवक और पत्रकार आज के समय के दिखावा तंत्र को आजमाने वाले वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। वैश्वीकरण के प्रभाव में हर कोई बड़ा बनना चाहता है।अपने आसपास के चकाचौंध वाले स्थिति को अपनाना चाहता है। उसी प्रकार रहन-सहन करना चाहता है। लेकिन कर नहीं पाता। मल्लू ऐसा पात्र है जो समाज की इस गिरफ्त में आ जाता है और खुद गिरफ्त हो गया।

निष्कर्ष :-

निष्कर्षता भूमंडलीकरण के इस दौर में मनुष्य के विचार बदल गए हैं। वह झूठी प्रतिष्ठा के लिए दिखावा कर रहा है। धन प्राप्ति के लिए गलत तरीके अपना रहा है। आम आदमी जहाँ मर रहा है, उसके मरने पर भी उसकी मृत्यु को उपभोग में बदलने वाली स्थिति निर्माण की जा रही है। लोगों के प्रति, उनके दुखों के प्रति किसी के मन में कोई संवेदना नहीं उभरती है। संस्कृति का खुले आम व्यापार हो रहा है, रिश्ते, नाते बेचे जा रहे हैं। ऐसे-ऐसे मुखौटे धारण किए जा रहे हैं जो दिखाते अलग है और प्रत्यक्ष अलग रूप में व्यक्त होते हैं। कला और खेल जैसी बाते बेचने का साधन हो गयी। साहित्य द्वारा इस स्थिति को बेनकाब किया गया है। निश्चित रूप से असग़र वजाहतके साहित्य में वैश्वीकरण का प्रभाव दिखाई पड़ता है।

संदर्भ:-

1.उत्तर आधुनिक मीडिया विमर्श, डॉ. सुधीश पचौरी, पृष्ठ35
2.बीच सड़क पर, दुष्यंत कुमार, पृष्ठ15
3.असग़र वजाहत के आठ नाटक,असग़र वजाहत, पृष्ठ81
4.पिचासी कहानियां, असग़र वजाहत, पृष्ठ 91
5.पिचासी कहानियां, असग़र वजाहत,पृष्ठ31

• **Copyright & License:**
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.